तुम बच्चे जानते हो कि हम है ईश्वरिय और सैक्स सुगी सम्प्रदाय। गाया जाता है संग तारे कुसंग बोरे।
अभी तुम बच्चे अनुभवी हो। ब्राहम्ण अनुभवी है। उस तरफ है बुद्ध सम्प्रदाय। वो जानते नही है। स्वच्छ
बुधी और मलेच्छ बुधी। इस समय है भक्ति का राज्य। यह है ईश्वर का राज्य। इस समय तुम ईश्वरिय
सम्प्रदाय हो। ईश्वर जब कहा जाता है तो मनुष्यों की बुधी चली जाती है ऊपर। तुम बच्चे जानते हो कि
हम ईश्वरिय सम्प्रदाय है। ईश्वरिय सम्प्रदाय, आसुरी सम्प्रादाय और दैवी सम्प्रदाय। अभी तुम बच्चे ईश्वरिय
सम्प्रदाय होने कारण गुप्त हो। ईश्वर है निराकार। तुम बच्चे भी अपने को निराकार समझते हो। ईश्वर ने
तुमको समझाया है। वो तो कुछ समझ नही सक्ते। तुम भी बुद्ध= बुद्ध सम्प्रदाय थे। अब ब्राहम्ण बने हो।
वो है भक्ति मार्ग। ज्ञान मार्ग को बिलकुल नही जानते। उनका कोई दोष नही है। तुम जानते हो साधु
सन्यासी गुरु लोग अनेक प्रकार के है। गावों में भी साधुसन्तआद रहते है। गुरुओं को माथा टेक्ते है।
जितना बड़ा नामी ग्रामी गुरु होता है उतने ही बड़े-2 लोग सिर झुकाते है। वो है बुद्ध बुधी पतित आसुरी
सम्प्रदाय। तुम समझते हो कि हम पुरुषोतम सुगम युगि है। पारलौकिक बाप हमको पुरुषोतम बना रहे है।
यह तुम जानते हो फिर भी भूल जाते हो। चित्र में तुम समझा सक्ते हो। वो पुरुषोतम यह कनिष्ट। यह
दुनियां ही तमोप्रधान तुच्छ बुधी है। शक्तिने स्वच्छ स्वर्ग के मालिक है। यह नर्कवासी तुच्छ बुधी है। चित्र
भी कितना अच्छा बनाया हुआ है समझाने के लिये। नई दुनिया को पवित्र पुरानी दुनियां को अपवित्र कहा ज
जाता है। बाप ने समझाया है वहां यथा राजा रानी तथा.... है। यहां तो है ही प्रजा का राज्य। अभी तुम
बच्चे सारी दुनियां से बिलकुल न्यारे हो। तुम मुख से कहते हो सभी रैप बुधी है। ईश्वर भी कहते है यह है
ईश्वरिय सम्प्रदाय यह है आसुरी ~~सम्प्रदाय~~ सम्प्रदाय। इनको तीसरा नेत्र मिला हुआ है ज्ञान का। ~~के~~ तीसरा
नेत्र दिव्य चक्षु दिव्य बाप ही दे सक्ते है। अब तुमको कहते है कि हमको निश्चय कराओ कि कैसे बाप आया
हुआ है। बोलो हम प्रजापिता ब्रहमा की सन्तान ब्राहम्ण है। ब्रहमा दवारा रचना रचते है। रचता है नई
दुनियां का नये धर्म का। विनाश कराते है पुरानी दुनियां का। तुमको तो ऐडाप्ट करते है। गायन है
परमपिता परमात्मा ब्रहमा दवारा ब्राहम्ण सम्प्रदाय रचते है। बाप आते है नां। हमको ब्राहम्ण बनाते है नां
देवता बनाने के लिये। इतने ढेर बच्चे है। बाप ने हमको ब्रहमा दवारा रचा फिर हमको कहते है कि मुझे या
याद करो। यह बताना बहुत जरूरी है। शिव बाबा परमपिता परमात्मा सबका बाप कहते है मुझे याद
करो। मुझे पतित पावन कहते हैं लिबरेटर कहते है। तो बाप कहते है हे बच्चों आत्माओं। अब कहेंगे तो जरूर
शरीर दवारा ही नां। ब्रहमा दवारा ही कहेंगे कि मुझे पतित पावन कहते है सो ही मै युक्ति बताता हूं।
अपने को आत्मा समझ मामेकम् याद करो। सभी को बाप कहते है अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को
याद करो तो जो तुम्हारे में सतो रजो तमो की खाद पड़ गई है वो निकल जावेगी। भगवान मनुष्य को नही
कहा जाता है। सदैव कहना चाहिये कि रूहानी पिता कहते है कि मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो जा
जावेंगे। सभी के लिये यह पैगाम मिलता है। नई दुनियां में पाप आत्मा होती ही नही है। धाम भी तीन है।
शान्ति धाम सुख धाम और दुःखधाम। तो है तो बहुत सहज। बोलो बाप कहते है मनमनाभव। अपने को
आत्मा समझो मुझ बाप को याद करो तो सतोप्रधान बन जावेंगे। इस समय सब तमोप्रधान है। यह है आयुरन
ऐज्ड वर्ल्ड। सभी को बाप का परिचय देना है। यही मुख्य बात भूल जाती है। फिर वो कहते है कि प्रमाण चाहिए
औ बाप ने तो कल्प पहले भी कहा था। यह वो ही संगम युग है। मनुष्य से देवता.... यह भी गायन है।
सतुयुग में सभी है पावन। इस एक बात पर ही अच्छा रीती समझावेंगे तो वो भी खयाल करेंगे। बाप हमको
ऐसे कहते है बाबा-2 अक्षर बहुत मीठा है। बाप जरूर ब्रहमा दवारा ही कहते है। मुझे प्रकृती का आधार
लेना पड़ता है। यह बिलकुल का मन अक्षर है। बाप कहते है इन गुरुओं आद को अब छोड़ो। सर्व का
सदगति दाता एक ही बाप है। पतित पावन एक ही ठहरा नां। बाकी जो भी मनुष्य मात्र है वो सभी पतित

98 25-5-67

सभी पतित है। बाबा-2 अक्षर बहुत मीठा है। बाबा हमको यह कहते है। हम अपने को आत्मा समझते
है। हम शरीर नही है। हम आत्मा का बाप परमात्मा है। यही एक बात सुनाने से जास्ती सुनाने की दरकार न
नही रहेगी। जब तक बाप को नही समझे है तो प्रश्न पूछते ही रहेंगे। 84का चक्र समझाना भी बहुत सहज है।
पहला-2 संदेश यही है। बाप ही बच्चों को कहते है। सद्गति का वर्सा उनसे ही मिलता है। यह है
इम्प्योअर दुनियां। प्योअर थी तो वाइसलेस थी अभी विशयस है। वो है शिवालय। नाम तो पवित्र है नां। नई
दुनियां को शिवालय कहते है। संगम पर बाप ने मनुष्य से देवता बनाया है धीरे-2 समझते जावेंगे। राजाई
स्थापन करने मेंसमय तो लगता है नां। कितने बिछुड़े हुये है। कहां-2 से निकल आये है और निकल आने
है। कोई विलायत में है कोई कहां है सब निकल आने है। बच्चे जानते है कि हम सर्विस करते रहते है।
अधीर्य होने की बात नही है। ऐसे नही कि प्रदर्शनी में इतना माथा मारा क्या निकला। ऐसे हार्ट फेल नही
होना चाहिये। एक बाप की याद और सर्विस। बुधी में बैठा रहना चाहिये कि हमे सतोप्रधान जरूर बनना
है। बुधी में यही तातलगी हुई होनी चाहिये। माशूक कहते है आशिकों से कि मुझ माशूक को याद रखो।
प्यारसे कहते है कि मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हो जावे। यह आखिर भूल क्यों जाते है। माया भुलाती
ही है तो फिर याद करो। लड़ाई इसमे है। उनका तो यह धंधा है कि तुमको याद से भुलाना तुम जानते हो
आधा कल्प हम याद करते आये है। इसमे विचार सागर मथन तो करना है है। यह संदेश सभी को पहुचाना
है। भक्ति मार्ग में कितना अहंकार है। इसने तो बहुत गुरू किये और पूरे 84जन्म लियेहै। अब वापस जाने में
तो खुशी होती है। बार-2गांठ बांध देनी चाहिये। बाप के याद करने की। फिर कभी विकार आद की तरफ
बुधी जा नही सकती। यह है गुप्त मेहनत। यह है गुप्त मेहनत। मुख्य है याद। उसपर बच्चों का ध्यान बहुत
कम है। पहले-2 बाप का परिचय देना चाहिये। बाप कहते है मामेकम् याद करो। इन बातों पर कोई आनाकानी
नही करेंगे। नम्बरवन पावन सो ही फिर 84जन्म लेकर पतित बनते है। यह राज योग बाप बिना कोई सिखानही
सकते है। कृष्ण तो बच्चा है। हम राजयोग सीखते है। सन्यासियों को घर बार छोड जाना होता है। बाप कहते
है एक जन्म पवित्र बनने लिये पावन दुनियां का मालिक बन जावेंगे। वो कहते है कि यह नही हो सकता
है। हम कहते है वाह! यह तो बहुत सहज है। यह तो है ही मृत्युलोक। अमरलोक में जाना है। तुम ब्र, कु,
कु, हो। बहन भाई हो गये हो नां। यह है युक्ति। हम ब्राहमण ब्रहन भाई अपवित्र नही हो सकते है।
हम पवित्र बन जावेंगे तो पवित्र दुनियाभी चाहिये। इसीलिये अपवित्र दुनियां का विनाश होता है। बाप ने
खुदकहा है कि यह रावण राज्यआसुरी समप्रदाय है। अन्धश्रधा से सबकी भक्ति करते रहते है। पहले-2 बाप का
परिचय देना है। नही तो इतना असर नही होताहै। बेहद का बाप है उनसे हमको वर्सा मिलता है।
अभी वो समय है। घड़ी पर ले आना चाहिये। अभी हम वापस जाने लिय पुरूषार्थ कर रहे है। थोड़ा-2 इशारे से
समझाना चाहिये। रंग भी देखनी होती है। तुम बच्चों को नेष्ठा के प्रोग्राम बहुत आते है। क्योंकि सारे दिन में
याद नही करते हो भूल जाते हो इसलिये प्रोग्राम देते है कि कुछ विकर्म विनाश हो जावे। प्रदर्शनी लिये भी
पुरूषार्थ चलता है तो अपने को पावन बनाने लिय भी पुरूषार्थ चलता है। बच्चों को बाप मत देते रहते है
कि गृहस्थव्यवहार में भी भल रहो। परन्तु अपने माशूक को याद करते रहो। वो आशिक माशूक भी पवित्र रहते
है। गन्दे नही होते है। यही तो है आत्मा और परमात्मा की बात। बाप कहते है आधा कल्प के तुम आशिक
हो मुझ माशूक बाप के। यह भी समझाने के लिय ही कहा जाता है। बाप से ज्ञान सुनते रहते हो।
बाप सब वेदों शास्त्रों का सार जानते है। इनमे प्रवेश कर समझाते है। प्रजापिता ब्रहमा के मुख से सुनावेंगे
तो जरूर प्रवेश ही करेंगे नां। नही तो कैसे बोलेंगे। तुम इनके मुख से बोल सकेंगे? जरूर आत्मा ही प्रवेश करेगी
नां। तो बाप कहते है हम इनमे प्रवेश कर शास्त्रों का सार सुनाता हूं। वो है सारा भक्ति मार्ग। अब तुमको
अव्यभचारी याद में रहना है। यही मेहनत है। जितना हो सके बाप को ही याद करते रहो। अच्छा मेहद के मात
पिता बापदादा का आज्ञाकारी सपूत श्रीमत धारी बच्चों को याद प्यार बाद गुड् नाईट. ओम